156 P
6,30

19-1

1287
10/21

891.431
R141R

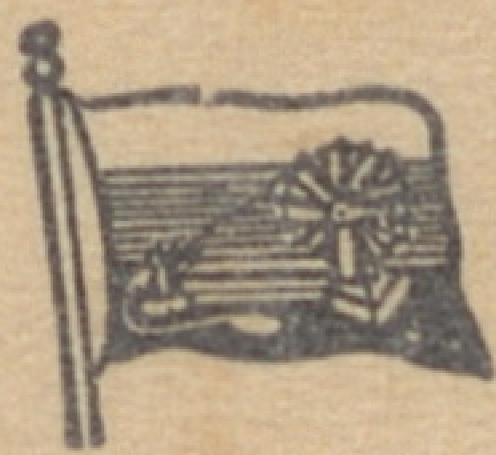

# राष्ट्र-वीणा

दिल फिदा करते हैं कुर्बान ज़िगर करते हैं ।
पास जो कुछ है वह माता को नज़र करते हैं ॥

"खुदीराम बोस"


संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक

**ब्रह्मचारी रामानन्द**

परिव्राजक-महामंडल, काशी ।



प्रथम बार

१९४७

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
10 DEC. 1930
DEPARTMENT

## देश-भक्तों के अरमान

यदि देश हित मरना पड़े, मुझको सहस्रों बार भी।
तो भी न मैं इस कष्ट को, निज ध्यान में लाऊँ कभी॥
हे ईश ! भारतवर्ष में, सौ बार मेरा जन्म हो।
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
630
15.12.71
GOVT. OF INDIA

वन्देमातरम्

# राष्ट्र-वीणा

( १ )

वन्देमातरम् ! सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम् ।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्,
फुल्ल कुसुमित मद्रुदल शोभिनीम्,
सुहासिनीम्, सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदां, वरदां, मातरम् ॥
त्रिश कोटि कंठ कलकल निनाद कराले,
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बोले माँ तुमि अबले ।
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणीम् मातरम् ॥

( २ )

प्रेमिक विश्व तिरंगा प्यारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ।।
सदा शक्ति बरसानेवाला, प्रेम-सुधा सरसानेवाला,
वीरों को हरषानेवाला, मातृ-भूमि का तन-मन सारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ।।
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढ़े क्षण-क्षण में,
काँपें शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय संकट सारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ।।
इस झण्डे के नीचे निर्भय, ले स्वराज यह अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ।।
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ,
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ।।
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये,
विश्व मुक्त करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ।
प्रेमिक विश्व तिरंगा प्यारा ।।

( ३ )

हम सब योद्धा मिलकर भाई रण भिक्षा को जाते हैं ।
भारत माता जननि हमारी उसका कष्ट मिटाते हैं ।
आपस में तुम लड़ना छोड़ो, प्रीति परस्पर करना सीखो,
यह सन्देशा लाते हैं ।

( ४ )

झण्डा है जिसको कहते हैं कौमी निशान है।
झण्डे पै खत्म मुल्क की बस सारी शान है॥
झण्डे के बल पै जान लो दीनो ईमान है।
झण्डा है जिसका फहरता वही आनबान है॥
लाज़िम है और फर्ज है हरएक जवान को।
रखना गँवाकर जान भी झण्डे की शान को॥
हाँ चाहिये कि मर मिटे झण्डे की आन पर।
लेकर बढ़े चले चलें छाती को तान कर॥
यह फर्ज दोस्तो है हर एक जवान पर।
कुर्बान जान कर दें कौमी निशान पर॥
घर-घर में अब तो मुल्क में झण्डा उड़ा करे।
हाँ क्यों न इसको देख के कोई मरा करे॥
ऐ काश अब तो हिन्द में वह दिन खुदा करे।
झण्डे के नाम पर सभी शैदा हुआ करे॥

( ५ )

नहीं मिटाने से मिट सकेंगे,
वह लाख हमको मिटा रहे हैं॥
खामोश हशरत खामोश हशरत,
अगर है ज़ज़बा वतन का दिल में।
सज़ा को पहुँचेंगे अपनी बेशक,
जो आज हमको मिटा रहे हैं॥

( ६ )

चुन चुन के फूल लेले, अरमान रह न जावे।
ये हिन्द का बगीचा, गुलज़ार रह न जावे॥
ये वो चमन नहीं है, लेने से होवें ऊजड़।
उलफ़त का जिससे कुछ भी, अहसान रह न जावे॥चुन०॥
करदो ज़बानबंदी, जेलों में चाहे भर दो।
माता पे होता कोई, क़ुरबान रह न जावे॥चुन०॥
छल औ फरेब से तुम, भारत का माल लूटो।
उसके गुजर का कोई, सामान रह न जावे॥
चुन चुन के फूल लेलो, अरमान रह न जाये।

( ७ )

तब्दील गवर्नमेंट की रफ्तार न होगी।
गर क़ौम असहयोग पै तैयार न होगी॥
हर शहर में बन जायँगे जलियानवाले बाग़।
इस मुल्क से गर दूर ये सरकार न होगी॥
जब तक कि इसे खून से सींचेंगे नहीं हम।
खेती वतन की दोस्तो गुलज़ार न होगी॥
सौदाई हैं हम, हमको दो लोहे की बेड़ियाँ।
सोने के ज़ेवरों में, यह झनकार न होगी॥
आपस में मिल गये हैं ये हिन्दु ओ मुसलिम।
अब बस तमीज़ तसबीये ज़ुन्नार न होगी॥
दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे।
इन हाथों में बन्दूक औ तलवार न होगी॥

हम ऐसी हुकूमत को मिटा देंगे "मुज़तरिब"।
ग़म में जो हमारे कभी ग़मख्वार न होगी ।।

( ८ )

हम गरीबों के गले का हार वन्देमातरम् ।
छीन सकती है नहीं सरकार वन्देमातरम् ।।
सर चढ़ों के सर में चक्कर उस समय आता ज़रूर ।
कान में पहुँची जहाँ झनकार वन्देमातरम् ।।
हम वही हैं जो कि होना चाहिये इस वक्त पर ।
आज तो चिल्ला रहा संसार वन्देमातरम् ।।
जेल में चक्की घसीटूँ भूख से हूँ मर रहा ।
उस समय भी कह रहा बेजार वन्देमातरम् ।।
मौत के मुँह पर खड़ा हूँ कह रहा जल्लाद से ।
भोंक दे सीने में अब तलवार वन्देमातरम् ।।
डाक्टरों ने नब्ज़ देखी सर हिलाकर कह दिया ।
हो गया इसको तो अब आज़ार वन्देमातरम् ।।
ईद, होली औ दशहरा, शबरात से भी सौगुना ।
है हमारा लाड़ला त्योहार वन्देमातरम् ।।
जालिमों का ज़ुल्म भी काफूर सा उड़ जायगा ।
फैसला होगा सरे दरबार वन्देमातरम् ।।

( ६ )

अब देशी पहिनो जी, भाइयो फैशन को छोड़ के ।
है विनती करती जी, भारत माता कर जोड़ के ।।

❀ शेर ❀

जो तुम पहनो खद्दर भाई, एक पन्थ दो काज ।
एक तो पैसा घर में बचे, दूजे हो भारत आज़ाद ।।
अब खद्दर पहिनो जी, न बैठो मुखड़ा मोड़ के ।।अब०।।

❀ शेर ❀

जो तुम समझो खद्दर चुभता न बनते छैल छबीले ।
भारतवर्ष के अन्दर कपड़े बनते रंग रंगीले ।।
पर पहनो देशी जी लन्दन से नाता तोड़ के ।।अब०।।

❀ शेर ❀

भारतवर्ष के बच्चे भूखों मरते रुदन मचाते ।
इङ्गलैण्ड के कुत्ते थारो दूध व बिसकुट खाते ।।
हाय कुछ न छोड़ा जी, ज़ालिम ले गये सब लूट के ।।अब०।।

( १० )

ज़ालिम तेरी तलवार के डर से न डरेंगे ।
हँस खेल हेल मेल से कुल जेल भरेंगे ।।
चक्की चलावें शोक से मानिन्द रेल के ।
छाती पै दुश्मनों के खूब दाल दलेंगे ।।ज़ालिम०
लुटेंगे ऐश जेल में बट बट के रस्सियाँ ।
ऊसर उजाड़ भूमि को आबाद करेंगे ।।ज़ालिम०
बाँधेंगे ठाट टाट का बिस्तर लगा-लगा ।
फाकेकशी करेंगे डरेंगे न मरेंगे ।।ज़ालिम०
परवाह जान की नहीं हरगिज़ वसन्त को ।
झेलें हज़ार सख्तियाँ तिल भर न टरेंगे ।।ज़ालिम०

( ११ )

जियें तो बदन पर स्वदेशी बसन हो।
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो॥
पराया सहारा है अपमान होना।
जरूरी है निज शान का ध्यान होना॥
है वाजिब स्वदेशी पर कुरबान होना।
इसी से है सम्भव समुत्थान होना॥
लगन में स्वदेशी के हर मर्दोज़न हो॥ मरें०—

निछावर स्वदेशी पै कर माल जर दो।
स्वदेशी से भारत का भण्डार भर दो॥
रहे चित्र से वह चकाचौंध कर दो।
दिखा पूर्वजों के लहू का असर दो॥
स्वदेशी ही सज-धज स्वदेशी चलन हो॥ मरें०—

चलो इस तरह अपना चर्खा चला दो।
मनों सूत की ढेरियाँ तुम लगा दो॥
बुनो इतने कपड़े मिलों को छका दो।
जमा दो स्वदेशी का सिक्का जमा दो॥
स्वदेशी ही गुल औ स्वदेशी चमन हो॥ मरें०—
करो प्रण कि आज़ाद होकर रहेंगे।
जहाँ में कि बरबाद होकर रहेंगे॥
सितमगर ही या शाद होकर रहेंगे।
कि हम शाहो आबाद होकर रहेंगे॥
स्वदेशी ही अख़तर स्वदेशी कथन हो॥ मरें०—

( १२ )

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाज़ुए कातिल में है॥
रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहराना वरदी दूरिये मञ्जिल में है॥सर०॥
वक्त आने दे बतायेंगे तुझे ऐ आसमाँ।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥सर०॥
आज मकतल में ये कातिल कह रहा था बारबार।
क्या तमन्ना है शहादत भी किसी के दिल में है॥सर०॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत में तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी महफिल की चरचा गैर की महफिल में है॥सर०॥

( १३ )

भारत के शेर जागो बदला है अब जमाना।
प्यारे वतन का इस दम आजाद है कराना॥
मत बुजदिली को हरगिज तुम पास दो फटकने।
आखिर तो दम अदम को होगा कभी रवाना॥भारत०॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं।
उनको हराम है भारत का अन्न खाना॥भारत०॥
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित।
वालंटियर बनो तुम सब छोड़ दो बहाना। भारत०॥
मन में झिझक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ।
स्वर्ग के बराबर फाँसी पर झूल जाना॥भारत०॥

( १४ )

गांधी तू आज हिन्द का एक शान बन गया।
सारी मनुष्य जाति का अभिमान बन गया ।।गांधी०।।
तू सत्य, अहिंसा, दया, निस्वार्थ त्याग से।
इस आज मर्त्यलोक में भगवान बन गया ।।गांधी०।।
तेरा प्रभाव, सादगी, हस्ती को देखकर।
दुश्मन भी बेज़बान हो हैरान बन गया ।।गांधी०।।
तेरी नसीहतों में वह जादू का असर है।
जिसको लगी हवा तेरी इंसान बन गया ।।गांधी०।।
तू दोस्त है हर कौम का हर दिल अजीज़ है।
सारा जहान तेरा कदरदान बन गया ।।गांधी०।।
गो हिन्द आज उठ न सके बायसे तक्दीर।
फिर भी स्वराज लेने का सामान बन गया ।।गांधी०।।
धिक्कार माधव है हमें तैंतीस कोटि को।
तुझसा फकीर जेल का मेहमान बन गया ।।गांधी०।।

( १५ )

श्वेत बक तुम हो बड़े कठोर।
साधु भेष में रे छल कपटी तुम हो पक्के चोर ।।
पावन नीरतीर रहते हो दारुण शीत घाम सहते हो।
एक पाँव से भी निशिवासर तप करते हो घोर ।।
दुनिया में कहलाते ध्यानी मौनी बन करते मनमानी।
दीन-मीन पर नहीं दिखाते भूल कृपा की कोर ।।

जहाँ मत्स्य को तू धर पाया, तहाँ चोंच से पकड़ दबाया।
गहसह करके पाठ पढ़ाया होने दिया न शोर ।।
पहिले तो विश्वासी बनते पीछे से फिर ज़हर उगलते।
निर्बल का तो हृदय मसलते अजमाते हो जोर ।।
गोरा तन पाने से क्या है सोचो इठलाने से क्या है।
जब हृदय के तुम काले हो दाबो न दीनता ओर ।।

( १६ )

नाह रखणी नहिं रखणी सरकार, ज़ालिम नहिं रखणी ।।
आये थे व्यापार करन को, बन गए दावेदार ।। ज़ालिम
भूखों मरें किसान देश के, मजा करे सरकार ।। ज़ालिम
मुसलमानों का मक्का छीना, सिक्खों का दरबार ।। ज़ालिम
लाला लाजपत कतल कराया, जवाहर को डंडों पिटवाया।
भगतदत्त को कैद कराया, दिया दास को मार ।। ज़ालिम
पुलिस और फौज़ यूँ बोली, अब हम चलायें किस पर गोली।
ये सब हैं अपने हमजोली, तू हैगी बदकार ।। ज़ालिम
पेशावर से शहर में जाकर, परजा को निहत्थी पाकर
मशीनगनों को बाढ़ लगाकर, दिये सैकड़ों मार ।। ज़ालिम
अब स्त्रियों का नंबर आया, आगरे में डंडों पिटवाया।
कमलावती को जेल में पाया, सरोजनी पर किया भूखका वार।
नहिं रखणी नहिं रखणी सरकार, ज़ालिम नहिं रखणी ।।

( १७ )

दूर आँखों से हो यह कब है गवारा गांधी।
बैठते उठते करें तेरा नजारा गांधी ।।

दिल से, जीसे यही अब कहते हैं दौलत वाले।
है गरीबों की गरीबी का सहारा गांधी ।।
क्या तमाशा यह तमाशा है नश्तर बनकर।
उनकी आँखों में खटकता है हमारा गांधी ।।
आफतें आईं तेरे सर पै बलायें आईं।
है वतन के लिये सब तुझको गवारा गांधी ।।
दिल से जीसे वह हमेशा के लिये दास हुआ।
कर लिया जिसने कभी तेरा नज़ारा गांधी ।।
जिसको देखो यही कहता है बड़े दर्द के साथ।
हो गया है आज नजरबन्द प्यारा गांधी ।।
सारी दुनिया में जमाने में पड़े एक हलचल।
तुम जो करदे किसी जानिब को इशारा गांधी ।।
कैदखाने के अँधेरे में पड़ा है बिसमिल।
देश भारत का चमकता हुआ तारा गांधी ।।

( १८ )

ऐ नौजवानो कह दो धन है किसान भाई।
जिनकी जगत में कीर्ति सब देश में जमाई ।।
हिन्दू मसीह मुसलिम नरमो गरम व फारस।
सब जाति पारसी भी जिनकी उगाई खाई ।।
सर्दी कड़ी व वर्षा और धूप कैसे कैसे।
झेले वे कष्ट प्रतिदिन बेकस किसान भाई ।।
पूछो दिलों से उनके श्रमजीवियों बताओ।
करते हैं सख्तियाँ क्या औ हो रही भताई ।।

भारतनिवासियों का कर्त्तव्य क्या नहीं है।
जो जुर्म ढाहते हैं उनकी करें सफाई।।
है देश आज कहता हम तो स्वराज्य लेंगे।
क्या जालिमों के घर पर करता कोई सुनाई।।

( १९ )

भारत आमार, भारत आमार, जेखाने मानव मेलिल नेत्र।
महिमार तूमि जन्मभूमि, एशियार तूमि तीर्थ क्षेत्र।।
दियेछ मानवे जगज्जननी दर्शने उपनिषदे दीक्षा।
दियेछ मानवे ज्ञान ओ शिल्प, कर्म्म भक्ति धर्म्म शिक्षा।।
भारत आमार, भारत आमार, केवले मा तूमि कृपार पात्री।
कर्म्म ज्ञानेर तूमि मा जननी, धर्म्म ध्यानेरे तूमि मा धात्री।।
भगवत्गीता गाइल स्वयं, भगवान सेइ जातिर सङ्गे।
भगवत् प्रेमे नाचिल गोरे, जे देशेर धूलि माखया अङ्गे।।
संन्यासी सेइ राजार पूत्र प्रचार करिल नीतिर धर्म्म।
जादेर मध्ये तरूण तापस करिल प्रचार सोहं धर्म्म।।
भारत आमार, भारत आमार, इत्यादि।
आर्य्य ऋषिर अनादि गभीर उठिल जेखाने वेदेर स्तोत्र।।
नह कि मा तूमि से भारतभूमि, नहि कि आमारा तादेर गोत्र।
तादेर गरिमास्मृतिर वर्म्मे, चले जावशिर करियाच्छ।।
जादेर गरिमामय ए अतीत, तारा करबन इनहे मा तूच्छ।
भारत आमार, भारत आमार, इत्यादि।।
भारत आमार, भारत आमार, सकल महिमा हउक खर्व्व।
दुःख कि जदि पाइ मा तोमार, पूत्र वलिया करिते गर्व्व।।

जदि वा विलय, पाय ए जगत्, लुप्तहय ए मानव वंश ।
जादेर महिमाय ए अतीत, तादेर कखन ओ हवेना ध्वंस ॥
भारत आमार, भारत आमार, इत्यादि ।
चोखरे सामने धरिया राखिया, अतीतेर सेइ महा आदर्श ॥
जागिव नूतन भावेर राज्ये, रचिव भारतवर्ष ।
ए देशेर भूमिर प्रतितृणपरे, आछे विधातार करुणा दृष्टि ॥
ए देशेर प्रति माथार उपरे करे देवगण पुष्प वृष्टि ।
भारत आमार, भारत आमार, इत्यादि ॥

मुद्रक
श्रीप्रवासीलाल वर्मा मालवीय,
सुरस्वती-प्रेस, काशी